विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत 7 अक्टूबर 2020

वर्ग सप्तम राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित।

दशमः पाठः

काकस्य चातुर्यम्

काकः झटिति स्वर्णहारम् आदाय सर्पस्य दिले अक्षिपत्।

कौवा जल्दी ही सोने के हार को लेकर सांप के बिल में रख दिया।

सैनिकाः सर्वम् अपश्यन् नृपाय च अकथयन्।

सभी सैनिक ने देखा और राजा को जाकर कहा।

नृपः सर्पस्य बिलं खन्तुम् आदिशत्।

राजा सांप के दिल को करने के आदेश दिए।

यथैव सैनिकाः सर्वस्य बिलं खन्तुम् आरभन्त तथैव सर्पः विलात् बहिः आगच्छत्।

जैसे ही सैनिक सभी ने बिल को खतना आरंभ किया वैसे ही साफ दिल से बाहर आया।

सर्पं दृष्ट्वा सैनिकाः तम् अमारयन् स्वर्णहारं च आनयन्। सांप को देखकर सैनिक ने सांप को मार दिए और सोना का हार लेकर आया।

सर्पं मृतं दृष्ट्वा काक - दम्पती प्रसन्नौ अभवताम्।

सांप को मरा देखकर कौवा और उसकी पत्नी बहुत प्रसन्न हुई।

सत्यमेव कथितम् – "बुद्धिः यस्य बलम् तस्य।"

सत्य ही कहा गया है- बुद्धि जिसके पास होता है उसी के पास बल होता है ।